# शिक्षा की अलख जगाती गोनिया बाई

प्रियंका कुमारी

*विद्यालय के कुछ बच्चों के साथ गोनिया बाई*

हम शिक्षक अक्सर कहते हैं कि बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण होती है। हम तो यह भी कहते हैं कि माता-पिता या अभिभावक किसी भी बच्चे के प्रथम शिक्षक होते हैं। ऐसे में उनकी महत्ता को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। एनसीएफ 2005 और हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता पर विशेष ध्यान आकृष्ट किया गया है। राज्य में तैयार की गई शिक्षक सन्दर्शिका में भी शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाने के लिए कई गतिविधियाँ एवं दिशा-निर्देश सुझाए गए हैं।

इन्हीं सब बातों से प्रेरित होकर शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी (अगस्त 2023) के दौरान मैंने बच्चों के साथ-साथ एक महिला अभिभावक को भी उनके शैक्षिक प्रयासों के लिए सम्मानित किया। गोष्ठी में सम्मिलित

अन्य महिलाएँ खुसर-पुसर करने लगीं कि आखिर मैडमजी ने इन्हें उपहार देकर क्यों सम्मानित किया। चूँकि आज तक विद्यालय द्वारा किसी भी अभिभावक को सम्मानित नहीं किया गया था, ऐसे में यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी।

हमारे गाँव मलहाटोल में ज़्यादातर मल्लाह और दुसाध के अलावा कुछ मुस्लिम परिवार रहते हैं। कुछ घर धोबी, बनिया, लोहार आदि के भी हैं। गाँववालों की जीविका के प्रमुख साधन खेती-बाड़ी, मछली पकड़ना, दिहाड़ी मज़दूरी और अन्य इलाकों में जाकर काम करना है। गाँव की ज़्यादातर महिलाओं ने पाँचवीं कक्षा तक या इससे भी कम स्कूली शिक्षा प्राप्त की है। इन सब वजहों से मैं काफी प्रयासों के बाद शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी में महिला अभिभावकों की उपस्थिति को सुनिश्चित करवा पाई थी। ऐसे में मेरे लिए यह एक सुनहरा अवसर था कि मैं महिला अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा का हिस्सा बना सकूँ। मैंने सभी अभिभावकों के बीच उस महिला अभिभावक का उदाहरण रखा जिन्हें मैंने सम्मानित किया था और साथ ही, उनके प्रयासों से सबको अवगत कराया। तो आइए जानते हैं इस शिक्षादूत की कहानी, जो स्वयं तो निरक्षर हैं लेकिन बच्चों की शिक्षा के प्रति अत्यन्त जागरूक और संवेदनशील हैं।

## गोनिया की बेचैनी

इनका नाम गोनिया बाई है। उम्र लगभग 60-65 वर्ष के आसपास होगी। पहली नज़र में कोई भी यही कहेगा कि ये स्वभाव से बहुत गुस्सैल और मुँहफट हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। लोगों ने उन्हें आज तक सिर्फ ऐसी आक्रोशित महिला के रूप में देखा है जिन्हें पढ़ाई के वक्त बच्चे का विद्यालय छोड़कर इधर-उधर भटकना, या फिर शिक्षकों का बच्चों पर ध्यान न देना बिलकुल बर्दाश्त नहीं होता। वे विद्यालय के पास वाली सड़क से ही गुस्साना शुरू कर देती हैं जो विद्यालय के कक्षा-कक्ष तक जारी रहता है। अपनी बातों से वे बच्चों, अभिभावकों और कभी-कभी तो शिक्षकों तक को अच्छे से लताड़ देती हैं। कुछ लोग उनके इस स्वभाव को बहुत पसन्द करते हैं तो कुछ को किसी दूसरे का अपने बच्चे पर चिल्लाना बिलकुल पसन्द नहीं आता।

गोनिया का यह स्वभाव मुझे बेहद पसन्द था। हाँ, यह बात अलग थी कि विद्यालय की प्रभारी प्रधानाध्यापिका को उनकी टोका-टोकी नागवार गुज़रती। एक बार विद्यालय में आए एक निरीक्षणकर्ता के समक्ष गोनिया बाई ने अपने कुछ सुझाव प्रस्तुत कर दिए तो विद्यालय प्रधान ने उन्हें स्कूल टाइमिंग में न आने की नसीहत दे डाली थी। विद्यालय के अन्य शिक्षकों को भी गोनिया बाई की बातें पसन्द थीं क्योंकि हम सबका मानना

था कि इस अत्यन्त मुश्किल परिवेश में जहाँ की अधिकांश आबादी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ी अवस्था में है, कोई तो ऐसा है जिसके अन्दर बच्चों की शिक्षा को लेकर छटपटाहट और बेचैनी है।

कई लोगों के मन में अक्सर यह सवाल उठता था कि आखिर इस महिला के अन्दर बच्चों की शिक्षा को लेकर इतनी अधिक बेचैनी क्यों है। गोनिया बाई खुद तो निरक्षर थीं लेकिन वे साक्षर होने का महत्व बखूबी समझती थीं। शायद इसीलिए उनके अन्दर शैक्षिक गैरज़िम्मेदारी के प्रति आक्रोश और शिक्षा के प्रति जागरूकता थी।

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

गोनिया बाई से बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि उनके दादा-दादी जेल में काम करने वाले सिपाहियों के घरों में खाना बनाने और उनके बच्चों की तेल मालिश का काम किया करते थे। उनके माता-पिता खेती-गृहस्थी का कार्य करते थे। कई सन्तानों की मृत्यु के पश्चात् गोनिया के माता-पिता को तीन सन्तानें हुईं जिनमें गोनिया दूसरे नम्बर पर थीं। गोनिया के चाचा उनके पिता को बच्चों के सम्बन्ध में अक्सर ताने दिया करते थे। भाई के तानों से रोष में आकर गोनिया के पिता अपनी जगह-ज़मीन बेचकर, शहर से दूर, एक गाँव में जा बसे जहाँ उनकी जाति (अनुसूचित जाति) के अधिकांश लोग रहते थे।

*अपने पोते-पोतियों की पढ़ाई में मदद करती गोनिया बाई*

पुराने समय की सोच और पारिवारिक परिस्थितियों के चलते गोनिया और अन्य भाई-बहन कभी स्कूल का मुँह नहीं देख पाए। गोनिया थोड़ी बड़ी हुईं तो माता-पिता ने पड़ोस के ही गाँव में उन्हें ब्याह दिया। गोनिया खुश थीं कि उनका पति बहुत पढ़ा-लिखा है, पूरी पाँचवीं पास। लेकिन गोनिया बाई की खुशी ज़्यादा दिन तक नहीं टिकी रह पाई। पति कमाने के लिए परदेश चले गए और वे गाँव में ही सास-ससुर के पास रह गईं। बचपन से ही वे बोलने में बहुत मुँहफट थीं और सामने वाले के मुँह पर जायज़-नाजायज़ बातें, बेहिचक बोल दिया करती थीं। इसके परिणाम स्वरूप ससुराल वालों से उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहे। पति पैसे कमाकर अपने माता-पिता के पास भेज दिया करते थे जिसमें से गोनिया बाई को कुछ नहीं मिलता था। एक बार पति ने परदेश जाते समय उन्हें 60 रुपए दिए थे जिसे उन्होंने भूसे में छुपाकर रखा था, इन्हें भी ढूँढकर छीन लिया गया।

गोनिया बाई स्वाभिमानी महिला थीं। हज़ार दुख सहकर भी वे अपने माता-पिता के पास नहीं गईं जो ससुराल से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर ही रहते थे। उन्होंने खेतों पर जाकर मज़दूरी करना शुरू की लेकिन किसी के सामने सहायता के लिए हाथ नहीं पसारे। एक बार गोनिया बाई के पति ने उनकी पिटाई कर दी, लेकिन हर बार की तरह इस बार उन्होंने बर्दाश्त नहीं किया और पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दी। बाद में, गोनिया बाई ने अगली बार से मारपीट न करने का वादा लेकर पति को जेल जाने से बचा लिया।

जीवन के इन्हीं उतार-चढ़ाव के बीच वे छह बच्चों की माँ भी बन गई थीं। पति अक्सर ही बाहर रहते थे। इसलिए बच्चों की ज़िम्मेदारी भी गोनिया बाई ने बखूबी निभाई। गरीबी में भी उन्होंने ईमानदारी से अपने जीवन का निर्वाह किया। वे कभी किसी के खेत से तो कभी कहीं और से मालिक के मुँह पर बोलकर, ढिठाई से कोई भी सामान ले जातीं, बिना किसी की सहमति का इन्तज़ार किए – लेकिन कभी चोरी नहीं करतीं।

## अनुभवों से समझा शिक्षा का महत्व

उन्होंने अपने सभी बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। बेटा-बेटी की शिक्षा में अन्तर नहीं किया। खुद स्कूल न जा पाने के बावजूद उन्होंने अपने अनुभवों से समझ लिया था कि स्वाभिमानी जीवन के लिए शिक्षा का क्या महत्व है। खुद के बच्चों की शिक्षा के प्रति चिन्तित होने के साथ-साथ वे गाँव के अन्य बच्चों की शिक्षा के प्रति भी अत्यन्त जागरूक हैं। तभी तो वे विद्यालय अवधि में किसी भी बच्चे को बाहर खेलता देख खूब आक्रोशित हो जातीं और बच्चे के

*लेखिका प्रियंका स्कूल के बच्चों की मौजूदगी में गोनिया बाई से बातचीत करती हुईं*

अभिभावकों को भी लताड़ देती हैं।

जब मैंने पूछा कि उनके भीतर इतना आक्रोश क्यों है तो उनका कहना था कि "बच्चे जब अच्छे से पढ़ेंगे तभी तो वे जीवन में कुछ बेहतर कर पाएँगे। यदि कुछ बेहतर नहीं भी कर सके तो कम-से-कम उन्हें जीवन जीने का सही ढंग तो पता होगा।" इतनी बातें कहकर उनकी आँखें नम हो गईं।

आज उनकी दो बहुएँ हैं और उन दोनों से भी उनकी नहीं बनती। फिर भी वे सुबह उठते ही अपने पोते-पोतियों पर समय से स्कूल जाने और पढ़ने के लिए दबाव बनाने लगतीं। यदि बहुएँ ज़्यादा दिन के लिए मायके जातीं तो वे उनसे बोलतीं कि "तुम्हें जहाँ जाना है जाओ, लेकिन बच्चों को यहीं छोड़कर जाना ताकि बच्चों की इतने दिन तक पढ़ाई न छूटे।"

कभी-कभी वे विद्यालय में आकर कक्षा के दौरान बच्चों को छुट्टी देने का अनुरोध करती भी दिख जाती हैं क्योंकि समय पर स्कूल भेजने के चक्कर में बच्चों को खाली पेट ही भेज दिया गया था। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता है।

गोनिया बाई की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उन्होंने विद्यालय में उपस्थित होने के लिए जितना अपने बच्चों को डाँटा है, उतना ही अपने पोते-पोतियों व समाज के अन्य बच्चों को भी। उनका मानना है कि बच्चा सिर्फ माता-पिता का नहीं होता

बल्कि पूरे समाज का होता है। इसलिए हर बच्चे को पढ़ाई के समय विद्यालय में मौजूद होना चाहिए और हर शिक्षक को बच्चों के प्रति ईमानदार रहना चाहिए। इतनी ही मुखरता से वे आज भी अपनी बात सबके सामने रखती हैं।

एक बार विद्यालय की एक शिक्षिका ने उन्हें अपना नाम लिखना सिखाने की कोशिश की तो वे हँसकर बोलीं, "अब इस उम्र में मैं अपना नाम लिखना सीखकर क्या करूँगी?" फिर भी शिक्षिका के अनुरोध पर उन्होंने मुस्कुराते हुए अपना नाम लिखना शुरू किया।

***

**सच** कहें तो वर्तमान समय में शालाओं को गोनिया बाई जैसे लोगों की नितान्त आवश्यकता है। आज जहाँ लोग सिर्फ अपना नाम, अपनी पहचान और अपने बच्चों तक ही अपनी ज़िम्मेदारी को सीमित रख रहे हैं, ऐसे माहौल में गोनिया बाई की मानसिकता अभूतपूर्व है।

---

**प्रियंका कुमारी:** पेशे से शिक्षिका, स्वभाव से सामाजिक कार्यकर्ता और हृदय से लेखक हैं। पिछले 14 वर्षों से प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य। वर्तमान में, मध्य विद्यालय मलहाटोल, सीतामढ़ी, बिहार में सहायक शिक्षिका हैं। कई काव्य रचनाएँ प्रकाशित। महिला साक्षरता, महिलाओं के डिजिटल सशक्तिकरण और ज़रूरतमन्द बच्चों की शिक्षा के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने व बच्चों से मित्रता करने में विशेष रुचि।

**सभी फोटो: प्रियंका कुमारी।**